ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue– V *Sep – Oct, 2022*

OPEN ACCESS Original Research Article

जवाहर नवोदय विद्यालय में सूचनक्रान्ति की उपादेयता

* चंदन कुमारी

** डॉ. डी.एन सिंह

**सहायक प्रोफेसर, मिल्लत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मधुबनी और अनुसंधान विद्वान, एलएनएमयू, दरभंगा*

*** डीन एजुकेशन डिपार्टमेंट एल.एन.एम.यू , दरभंगा*

सारांश :

सदर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा के शिक्षा संकाय में शिक्षा शास्त्र विषय में पीएचडी उपाधि हेतु शोध प्रबंध का शोध प्रारूप.

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

शोध समस्या:

आधुनिकरण तथा सूचना क्रांति के संदर्भ में दरभंगा प्रखंड के नवोदय विद्यालय का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भुमिका:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के देश के हर जिले के में एक मॉडल विद्यालय छोड़ने का प्रावधान किया गया था। तब अनुसार एक योजना बनाई गई जिसके अंतर्गत सहशिक्षा आवासीय विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। नवोदय विद्यालय माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्रदान करने वाले पूर्ण आवासीय शिक्षा विद्यालय हैं। वर्ष 1985-86 मे मात्र दो विद्यालयों के साथ प्रायोगिक रूप से शुरू की गई इस योजना के अंतर्गत देश के 34 राज्यों केंद्र शासित प्रदेशों में अब तक इनकी संख्या बढ़कर 576 हो चुकी है। इन विद्यालयों में मुख्यता ग्रामीण क्षेत्रों के ऐसे प्रतिभाशाली, प्रखर एवं मेधावी क्षेत्रों का चयन कर विकास करने का प्रावधान है, जिन्हें इन विद्यालयों के अभाव में अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों से वंचित रहना पड़ता है। यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाते हैं की प्रवेश पाने वाले छात्रों में कम से कम एक तिहाई बालिकाएं हो।

छात्राओं का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाकर शिक्षा लेना नवोदय विद्यालय की एक विशिष्टता है। इसके अंतर्गत देश के हिंदी भाषा क्षेत्र में स्थित हम किसी एक नवोदय विद्यालय की नौवीं कक्षा में पढ़ रहे छात्रों के 30% विद्यार्थी किसी अहिंदी भाषी स्कूल के छात्र हिंदी भाषा इलाके के विद्यालय में जाकर एक सत्र तक पढ़ते हैं। इस योजना का उद्देश्य देश के नागरिकों की भाषा एवं संस्कृति की विविधता एवं बहुलता समझ के माध्यम से राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देना है ।

वर्तमान दौर में सूचना तकनीकी का विशेष महत्व है। कंप्यूटर, इंटरनेट,सॉफ्टवेयर तथा अंतक निक तकनीकों के क्षेत्र में वैज्ञानिकों का एक एक समूह नए नए माध्यमों को विकसित करने में समर्पित है। भारत में बैंगलोर और विशेष रूप से सूचना तकनीकी का एक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue– V *Sep – Oct, 2022*

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रमुख केंद्र है।

पिछले 5 दशकों में व्यापक पैमाने पर संचार साधनों में विकास का अनुभव किया जा सकता है। टेलीविजन का लगातार विकास हुआ है। रेडियो के विकास तथा विस्तार का दायरा विस्तृत हुआ है। इसी तरह सेटेलाइट, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, मोबाइल ,ईमेल एवं इंटरनेट आदि का क्षेत्र में लगातार विकास के संकेत मिल रहे हैं। इस प्रकार सूचना तथा संवाद के क्षेत्र में एक क्रांति की स्थिति उत्पन्न हुई है। सूचना तकनीक को में व्यापक पैमाने ऊपर हो रहे क्रांतिकारी परिवर्तन को सूचना क्रांति के नाम से जाना जाता है।

प्रासंगिकता:

प्रतिभाशाली छात्रों के लिए नई शिक्षा नीति के तहत नवोदय विद्यालय का विकास किया गया। प्रस्तुत शोध में आधुनिकीकरण तथा सूचना क्रांति के संदर्भ में नवोदय विद्यालयों का मूल्यांकन किया जाएगा। वस्तुतः अशिक्षा के कारण छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टि का विकास होता है। शिक्षा के आधार पर छात्रों में वैश्विक चेतना उत्पन्न होती है। शिक्षा के आधार पर छात्र धर्म निरपेक्ष करण की प्रक्रिया से जुड़ता है। शिक्षा व्यक्तित्व संरचना के विकास में भी सहायक है। नवोदय विद्यालय की स्थापना इन्हीं उद्देश्यों के परिपेक्ष में किया गया था। अतः शोध के आधार पर नवोदय विद्यालयों के विविध पक्षों का अध्ययन किया जाएगा। वर्तमान संदर्भ में अध्ययन विषय निश्चित तौर पर प्रासंगिक एवं औचित्यपूर्ण है। इससे नवोदय विद्यालयों के विकास एवं सुधार में लाभ मिल सका है।

अध्ययन का उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों की स्थापना की गई है:-

१) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तथा नवोदय विद्यालय के बीच मौजूद संबंधों की विश्लेषण किया जाएगा।

२) वैज्ञानिक दृष्टि, तर्कपूर्ण औचित्य तथा धर्मनिरपेक्ष करण की प्रक्रिया के संदर्भ में नवोदय विद्यालयों का मूल्यांकन किया जाएगा।

३) शिक्षण तकनीकी तथा वर्ग प्रबंधन के आधार पर नवोदय विद्यालयों की कार्य संस्कृति तथा संस्कृति का विवेचन किया जाएगा।

४) वर्तमान संदर्भ में शिक्षण तकनीकी के क्षेत्र में सूचना क्रांति का उपयोग अधिक उपयोगी सिद्ध हो रहा है उन ग्राम अतः सूचना क्रांति के तकनीकी को तथा नवोदय विद्यालय के बीच मौजूद संबंधों का विश्लेषण किया जाएगा।

प्रकल्पनायें:

नवोदय विद्यालय में आधुनिक संदर्भ में कार्य संस्कृति में सुधार की आवश्यकता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के आधार पर नवोदय विद्यालयों का विकास अपेक्षित है।

१) आधुनिकरण सामाजिक परिवर्तन तथा विकास की एक प्रक्रिया है प्रोग्राम जितना अधिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र होगी उतना अधिक नवोदय विद्यालय का विकास होगा।

२) आधुनिकीकरण तथा आर्थिक विकास में स्पष्ट संबंध मौजूद है। अर्थात आधुनिकीकरण प्रक्रिया आर्थिक विकास की गति को

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue– V *Sep – Oct, 2022*

OPEN ACCESS Original Research Article

तीव्र करने में सहायक है। साथ ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आर्थिक विकास हेतु सामाजिक वातावरण के निर्माण में सहायक है। जितना अधिक नवोदय विद्यालयों में व्यवसायिक शिक्षा पर ध्यान दिया जाएगा उतना अधिक छात्रों को रोजगार प्राप्त करने में सुविधा होगी संचार

३) संचार मानव समाज के लिए अपरिहार्य है । सामाजिक संबंधों की स्थापना के लिए अंतः क्रिया अपेक्षित है। अंतः क्रिया के लिए अनुक्रिया तथा उत्तेजना के लिए बातचीत का होना अपेक्षित है। बातचीत के लिए अथवा संवाद स्थापित करने हेतु संचार साधनों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार अतः अंतः क्रिया का क्रिया तथा सामाजिक संबंधों की प्रक्रिया के साथ संचार साधनों का स्पष्ट संबंध है । जितना अधिक संचार साधनों एवं सूचना तकनीको का उपयोग नवोदय विद्यालयों में होगा उतना अधिक छात्रों के व्यक्तित्व संरचना का विकास होगा।

४) संचार साधनों का दीर्घकालीन इतिहास रहा है। इसमें स्थायित्व निरंतरता तथा विकास का तत्व निहित है। सदियों से पत्रों का उपयोग होता है अभी भी पत्रों का उपयोग होता है। पत्र के रूप में अब ईमेल का भी सहारा लिया जाता है। सेक्स का भी उपयोग होता है। पत्र के विकल्प के रूप में दूरभाष का भी उपयोग व्यापक पैमाने पर हो रहा है। दूरभाष की भी अनेक तकनीकों का उपयोग होता है। उदाहरण स्वरूप मोबाइल आदि। इस प्रकार संचार साधन में स्थायित्व भी है तथा परिवर्तन का संकेत भी प्राप्त होता है। जितना अधिक वर्ग प्रबंधन तथा कार्य संस्कृति में सूचना तकनीक का उपयोग होगा उतना अधिक छात्रों का शैक्षिक विकास होगा ।

विषय वस्तु सैद्धांतिक विवेचन:

जवाहर नवोदय विद्यालय अथवा नवोदय विद्यालय भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चलाई जाने वाली शिक्षण परियोजना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1980 सेक्स के अंतर्गत ऐसे आवासीय विद्यालयों की कल्पना की गई जिन्हें जवाहर नवोदय विद्यालय का नाम दिया गया। जो सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण प्रतिभाओं को को आगे लाने का उत्तम प्रयास है। इस परियोजना का प्रमुख हेतु गांव गांव तक उत्तम शिक्षा पहुंचाना है यह विद्यालय पूर्णता आवासीय एवं निशुल्क विद्यालय हेतु है कोमा जहां विद्यार्थियों को निशुल्क आवास भोजन शिक्षा एवं खेलकूद सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। हर जिले में एक नवोदय विद्यालय होता है। प्रवेश हेतु कक्षा 05 के विद्यार्थियों के लिए प्रवेश परीक्षा होती है एवं प्रत्येक जिले से 80 छात्रों का चयन किया जाता है। लड़ने आधुनिकरण को स्पष्ट करते हुए बताया है कि आधुनिकीकरण एक प्राचीन प्रक्रिया के लिए एक समकालीन शब्द है। यह सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। इसके अनुसार अल्पविकसित समाजों की विशिष्टता को अपनाते हैं। डेनियल लरनर " Encyclopedia of social sciences " में अपनी एक शोध निबंध "Modernization" में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के विविध आयामों की व्याख्या की है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का आर्थिक घटक के साथ पंच एवं तर्कपूर्ण संबंध होता है उनके अनुसार आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में विकास आर्थिक घर घटक है। प्रख्यात समाजशास्त्रीय प्रोफेसर श्यामाचरण दुबे के अनुसार संदेश दे और ले सकने की क्षमता ने मानव के सामाजिक संबंधों को एक विशेष

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue– V *Sep – Oct, 2022*

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वरूप दिया है इस क्षमता का विकास इन संबंधों के क्षेत्र को विस्तारित और पुष्ट करता है। विचारों को स्थायित्व दे सकने की योग्यता जिस गति से विकसित हो गई उसी गति से उनका संस्कृत की विविधता और जटिलता भी बढ़ती गई। सीमित संचार साधनों के काल में मानव समाज छोटे-छोटे स्वतंत्र इकाइयों में खंडित रहा इसके विपरीत जनसंचार के माध्यम के अभूतपूर्व विकास में समसामयिक विश्व को संकुचित कर एक बड़ा सा गांव बना दिया है।

अध्ययन क्षेत्र:

वर्तमान शोध हेतु दरभंगा प्रखंड के अंतर्गत दरभंगा मधुबनी एवं समस्तीपुर जिले के में अवस्थित नवोदय विद्यालय का चयन अध्ययन क्षेत्र के रूप में किया गया है।

दरभंगा प्रखंड, दरभंगा जिला, मधुबनी जिला, समस्तीपुर जिला

अध्ययन पद्धति एवं स्रोत:

प्रस्तुत शोध गंभीर मुद्दों एवं ज्वलंत समस्याओं पर आधारित है। अतः सुनिश्चित आधारों पर तथ्यों तथा संकलन एवं विश्लेषण किया जाएगा। प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया जाएगा। साथ ही सूचना तकनीकी विभिन्न साधनों के आधार पर तथ्यों एवं आंकड़ों का संकलन किया जाएगा।

विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान रचना के आधार पर शोध की दिशा को सुनिश्चित किया जाएगा। इंटरनेट, ई-मेल तथा सूचना तकनीकी के साधनों का भी उपयोग होगा।

यू फ्लीक ने अपनी पुस्तक " Managing Quality In Qualitative Research" में स्पष्ट किया है की अध्ययन की शुरुआत सवालों से होती है। पहला सवाल होता है "क्या करना है।" दूसरा सवाल होता है कैसे करना है। इन्हीं सवालों के लिए अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध हेतु अनुसंधान रचना का उपयोग किया गया है। सुनिश्चित उद्देश्य था उपकल्पना के आधार पर अनुसंधान की शुरुआत की गई है। शोध का संतुलित प्रबंधन किया गया है।

अनुसंधान प्ररचना:

पी०वी० यंग के अनुसार सामाजिक अनुसंधान एक व्यवस्थित वैज्ञानिक उपक्रम है। यह तर्कपूर्ण है। इसमें नए तथ्यों का अन्वेषण किया जाता है। साथ ही पुराने तथ्यों का परीक्षण एवं सत्यापन किया जाता है। कार्यक्रम संबंध की व्याख्या की जाती है। घटनाओं की कथा का अध्ययन किया जाता है। दो या दो से अधिक घटनाओं के बीच मौजूद संबंधों का विश्लेषण किया जाता है। घटना को नियंत्रित करने वाले स्वभाविक नियमों का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध के आरंभ में अनुसंधान रचना का निर्माण किया गया है। वस्तुत अनुसंधान की संरचना है। संरक्षण अनुसंधान का बुनियाद खड़ा होता है। यह एक रणनीति है। इस्तर में अनुसंधान कर्मी अनुसंधान से संबंधित सभी नीतियों को सुनिश्चित करता है। एक रचना है इसके अंतर्गत अनुसंधान अध्ययन की कथा तकनीकों के संबंध में तैयारी करता है।अत: प्रस्तुत शोध एवं विवेचना का निर्धारण किया गया है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue– V *Sep – Oct, 2022*

OPEN ACCESS Original Research Article

- अनुसंधान प्ररचना
- विवरणात्मक अनुसंधान प्ररचना
- विवेचनात्मक अनुसंधान प्ररचना
- उत्तरदायित्व का चयन निदर्शन पद्धति

दरभंगा प्रमंडल के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र का परिभ्रमण किया जाएगा। समग्र की सूची को संकलित किया जाएगा। स्थित देव निदर्शन पद्धति के आधार पर समग्र के अनुपात में निर्देशन का चयन किया जाएगा। का चयन प्रतिनिधि पूर्ण तथा पर्याप्त संख्या में होगा।

प्राथमिक स्रोत:

साक्षात्कार

शिक्षा मनोवैज्ञानिक और कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि यदि हम किसी से कुछ जानना चाहते हैं तो उसी से क्यों नहीं पूछ लेते हैं। जाहिर है कि पूछने की पद्धति को साक्षात्कार कहते हैं। साक्षात्कार के लिए दो पक्षों का होना आवश्यक है। एक पार्क साक्षात्कार करता का होता है तथा दूसरा पक्ष साक्षात्कार दाता का होता है। साक्षात्कार करता प्रश्नों के सहारे साक्षात्कार दाता के से आमने-सामने की स्थिति में सवाल करता है तथा सूचना एवं तथ्यों का संकलन करता है। प्रस्तुत अध्ययन में भी उत्तर दाताओं से अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार के जरिए तथ्यों का संकलन किया गया है।

अनुसूची:

अनुसूची प्रश्नों की एक तालिका होती है। इसमें कई सवाल पूर्व से ही संरचित होते हैं। अनुसूची का हर सवाल अनुसंधान की केंद्रीय समस्या के साथ पर पूर्ण रुप से जुड़ा होता है। साधारण अनुसूची का उपयोग साक्षात्कार करता साक्षात्कार के दौरान करता है। अनुसूची के प्रश्नों के आधार पर साक्षात्कार दाता से अनुसूचियों का संकलन करता है तथा उसे लिखता भी जाता है। चुकी इसमें लिखने का काम साक्षात्कार करता का होता है अतः समाज के शिक्षित तथा अशिक्षित सभी वर्ग के लोगों से तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन किया जाता है। इसमें साक्षात्कार करता सभी प्रश्नों के उत्तर को लिखता है। अतः इसमें भूलने की समस्या पैदा नहीं होती है। गौरतलब है कि साक्षात्कार अनुसूची के उपयोग में उदारता के साथ आरंभ में रिपोर्ट की स्थापना करनी होती है।

अवलोकन:

गुडे तथा हॉट ने स्पष्ट किया है कि शिक्षा शास्त्र तथा अन्य क्षेत्रों में क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान अवलोकन का उपयोग किया जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि अनुसंधान का आरंभ अब लोगों से होता है तथा अंत में अवलोकन के आधार पर ही तथ्यों का सत्यापन होता है। यह प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित होता है। अवलोकन विधि में आंखों देखी घटनाओं का संकलन किया जाता है। अवलोकन द्वारा संकलित में विश्वसनीयता मौजूद रहती है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue– V *Sep – Oct, 2022*

OPEN ACCESS Original Research Article

१) सूचना तकनीक

२) कंप्यूटर इंटरनेट

३) कंप्यूटर ईमेल

४) कंप्यूटर फेसबुक

५) डिजिटल कैमरा

द्वितीयक स्रोत:

१) पत्र तथा डायरी

२) अन्य अभिलेख

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१) अनुसंधान संदर्शिका (प्रोफेसर एस.पी गुप्ता)

२) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां (मोहम्मद सुलेमान, दिनेश कुमार)

३) मानव मूल्य एवं शिक्षा (डॉक्टर आर.एस शर्मा प्रोफेसर शिक्षा विभाग)

Cite This Article:

* चंदन कुमारी आणि ** डॉ. डी. एन सिंह *(2022).* **जवाहर नवोदय विद्यालय में सूचनक्रान्ति की उपादेयता,**

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal, XI (V) Sep – Oct, 100-105.